हिन्दी -विभाग   डॉ० कविता कुमारी सिंह
आर० एन० कॉलेज, हाजीपुर

स्नातक - III

विषय - ध्वनि परिवर्तन -

महाप्राणीकरण — कभी-कभी अल्पप्राण ध्वनियाँ महाप्राण हो जाती हैं। जैसे हस्त > हाथ, गृह > घर, पृष्ठ > पीठ आदि।

समीकरण — समीकरण से तात्पर्य एक ध्वनि का दूसरी ध्वनि को अपना रूप प्रदान करना अर्थात जब दो भिन्न ध्वनियाँ पास रहने से सम हो जाती है उसे समीकरण कहते हैं। समीकरण दो प्रकार का होता है — पुरोगामी एवं पश्चगामी

पुरोगामी — जैसे अग्नि > अग्गि, पत्र > पत्ता आदि

पश्चगामी — चर्म > चम्म, कर्म > कम्म

घोषीकरण — उच्चारण की सुविधा के लिए

The most difficult thing is the decision to act, the rest is merely tenacity. – Amelia Earhart

Appointments

8.00

कुछ ध्वनियाँ अघोष से सघोष हो जाती हैं, उन्हें घोषीकरण कहते हैं। जैसे शती > सदी, प्रकट > परगट, काक > काग आदि।

9.00

अघोषीकरण — इसमें घोष ध्वनियाँ अघोष हो जाती हैं। जैसे — मेघ > मेख, खर्च > खरच आदि।

अनुनासिकीकरण — अनुनासिक ध्वनियाँ अनुनासिकता के कारण परिवर्तित हो जाती हैं। ऐसा मुख-सुख के कारण होता है। जैसे — सत्य > साँच, श्वास > साँस, कूप > कुआँ इत्यादि।

ह्रस्वीकरण — जब दीर्घ स्वर या व्यंजन ह्रस्व हो जाते हैं, वहाँ ह्रस्वीकरण होता है। जैसे — बादाम — बदाम, पाताल > पताल

Gandhi J

दीर्घीकरण — जब ह्रस्व व्यंजन या स्वर दीर्घ हो जाते हैं, वहाँ दीर्घीकरण होता है। जैसे — कंटक > काँटा, लज्जा > लाज, चन्द्र > चाँद आदि।

संधिकरण — जहाँ शब्दों के मध्यवर्ती व्यंजन पहले स्वरों में परिवर्तित होकर फिर अपने निकटवर्ती स्वरों के साथ संधि कर लेते हैं वहाँ संधिकरण होता है। जैसे — मयूर - मोर नयन — नइन (अ+इ+ए)

भौगोलिक विस्तार के कारण भी ध्वनि परिवर्तन होता है। क्षेत्र बदलने से भाषा में बदलाव आता है। जिस भाषा का भौगोलिक ~~स्तर~~ विस्तार होता है, उसी ध्वनियों का उच्चारण में देखा- भेद से भी अनेक परिवर्तन होते हैं। ध्वनि परिवर्तन के इन परिवर्तनों को एक ध्वनि रूप के वैकल्पिक रूप कहा जा सकता कि परिवर्तन के अनेक दिशाएँ हैं। इन्हीं दिशाओं ध्वनियों का परिवर्तन होता है।

An eye for an eye will only make the whole world blind. – Mahatma Gandhi